बहारे तहरीर

(हिस्सा 9)

Milad Edition

By

Abde Mustafa Official

बहारे तहरीर

(हिस्सा 9)

(मीलाद एडीशन)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशल

Contents

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत बारह रबीउल अव्वल को हुई.....3
जंग की तैय्यारी.....10
तीन दुआयें.....11
मेरी लड़की की शादी है.....12
आलिम और इश्क़.....13
भोली भाली बीवी.....15
चलो सब वुज़ू करें.....17
चोर की दाढ़ी में तिनका.....18
माल कम औलाद ज़्यादा.....19
तमन्नाओं की जंग.....20
सभी तो बाजे बजा रहे हैं.....21
एक हमारे बच्चे हैं.....22
क्या हुज़ूर ﷺ की वफ़ात बारह रबी उल अव्वल को हुई?.....23
ए मुसलमानों! तुम कैसे सुकून से हो?.....25
लोग आसान समझते है मुसलमान होना.....27
वो फिर भी लड़े.....28
तुम्हारे पास तुम्हारा नबी है.....29
दर्से बुखारी बिद्द'अत.....31
क्या आप जानते हैं कि सहाबए किराम में से कोई बहरा न था!.....32

आप भी हैं अब्दे मुस्तफ़ा.....33
एक रिवायत अनेक नसीहत.....34
इल्म की चाबी.....39
दीन में दाढ़ी है, दाढ़ी में दीन नहीं.....40
उँगलियों की करामत पे लाखों सलाम.....41
मंगोल, राफज़ी और खिलाफते अब्बासिया.....43

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत बारह रबीउल अव्वल को हुई

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत माहे रबीउल अव्वल की बारहवीं तारीख़ को हुई और इस पर हमारे पास कषरत से दलाईल मौजूद हैं। तारीखे विलादत में इख्तिलाफ भी है लेकिन जम्हूर के नज़दीक बारह रबीउल अव्वल ही दुरुस्त है। नीचे कुछ किताबों के हवाला जात पेश किये जाते हैं जिन में तारीखे विलादत बारह रबीउल अव्वल को ही करार दिया गया है।

(1) سیرت ابن اسحاق بہ حوالہ الوفا، ص87

(2) سیرت ابن ہشام، ج1، ص107

(3) تاریخ الامم والملوک المعروف بہ تاریخ طبری، ج2، ص125

(4) اعلام النبوۃ، ص192

(5) المستدرک للحاکم، ج2، ص603

(6) عیون الاثر، ج1، ص33

(7) تاریخ ابن خلدون، ج2، ص394

(8) سیرت ابن خلدون، ص81

(9) المورد الروی للقاری، ص96

(10) محمد رسول اللہ، ج1، ص102

(11) حجۃ اللہ علی العالمین، ج1، ص231

(12) ماثبت بالسنۃ، ص31

(13) نور الابصار، ص13

(14) النعمۃ الکبری، ص20

(15) تاریخ اسلامی، ص35

(16) معارج النبوۃ، ج1، ص37

(17) مدارج النبوۃ، ج2، ص18

سیرت حلبیہ، ج1، ص93 (18)

المواہب اللدنیۃ، ج1، ص132 (19)

بلوغ الامانی، ج2، ص189 (20)

تاریخ الخمیس، ص196 (21)

البدایہ والنھایہ، ج2، ص260 (22)

بیان المیلاد النبوی، ص50 (23)

فتح الباری، ج8، ص130 (24)

فقیھہ السنۃ، ص60 (25)

کتاب اللطائف، ص230 (26)

سرور القلوب، ص11 (27)

فتاوی رضویہ، ج26، ص411 (28)

اسلامی زندگی، ص106 (29)

فتاوی نعیمیہ، ص46 (30)

تبرکات صدر الافاضل، ص199 (31)

رسائل کاظمی، ص2 (32)

سیرت رسول عربی، ص43 (33)

ذکر الحسین، ص116 (34)

فتاوی مہریہ، ص110 (35)

جنتی زیور، ص473 (36)

دین مصطفی، ص84 (37)

محمد نور، ص56 (38)

کتاب فارسی، ص80 (39)

انوار شریعت، ص9 (40)

الخطیب، ص121 (41)

تواریخ حبیب الہ، ص13 (42)

جمال رسول، ص11 (43)

رسالہ میلاد نمبر، ص24 (44)

پیش لفظ تصفیہ مابین سنی وشیعہ (45)

فیصلہ ہفت مسئلہ، ص4 (46)

دیوبندیوں، وہابیوں اور شیعوں کی کتب سے ثبوت؛

میلاد النبی از اشرف علی تھانوی، ص90 (47)

سیرت خاتم الانبیا، ص19، 20 (48)

ہادی عالم، ص43 (49)

ہفت روزہ، مارچ 1977، ص7، 18 (50)

قصص النبیین، ج5، ص27 (51)

نفحۃ العرب، ص141 (52)

خاتون پاکستان رسول نمبر، ص36 (53)

رحمت عالم، ص13 (54)

ماہنامہ محفل لاہور، مارچ 1981، ص65 (55)

خاتون پاکستان رسول نمبر، ص839 (56)

الشمامۃ العنبریہ، ص8 (57)

رسول اکرم ﷺ، ص21، 22 (58)

اکرام محمدی، ص270 (59)

سیرۃ الرسول، محمد بن عبد الوہاب (60)

سید الکونین، ص60 (61)

حیاۃ القلوب، ج2، ص112 (62)

کتب عامہ اور تاریخ ولادت؛

سید الوری، ج1، ص88 (63)

سیرت احمد مجتبی، ج1، ص5، 147، 149 (64)

تاریخ مکۃ المکرمہ، ج1، ص211 (65)

الامین ﷺ، ص191 (66)

محمد سید لولاک، ص118 (67)

ہمارے پیغمبر، ص219 (68)

ہمارے رسول پاک، ص43 (69)

کتاب شان محمد، ص234 (70)

محمد رسول اللہ، ص30 (71)

شواہد النبوۃ، ص52 (72)

معلومات عامہ، ص61 (73)

نور کامل، ص36 (74)

اسلامی تہذیب و تمدن، ص347 (75)

ماہنامہ ترجمان اویس، ص71 (76)

ماہنامہ نور الحبیب، اکتوبر 1989، ص41 (77)

سیرت کوئز، ص18 (78)

موضع القرآن، ص33 (79)

کیلنڈر از علامہ اکرم رضوی (80)

جان جاناں، ص117 (81)

علموا اولادکم محبت رسول اللہ، ص99 (82)

خاتم النبیین، ص118 (83)

حیات محمد ﷺ، ص26 (84)

ماہنامہ جام عرفان، اکتوبر1984 (85)

ہفت روزہ الفقیہ، میلاد نمبر1932، ص140 (86)

نورانی شمع ترجمہ قرآن مجید، ص13 (87)

تاریخ اسلام از محمود الحسن، ص31 (88)

تاریخ ملت، ص34 (89)

رسالت مآب، ص9 (90)

خاتم المرسلین، ص78 (91)

تفسیر ضیاء القرآن، ج5، ص665 (92)

حاشیہ الروض الانف، ج1، ص107 (93)

ضیاے حرم، عید میلاد النبی نمبر، ص184 (94)

سیرت سرور عالم، ص93 (95)

خطبات الاحمدیہ، ص12 (96)

اسلام کی پہلی عید، ص33 (97)

فضیلت کی راتیں، ص27 (98)

اشرف السیر، ص146 (99)

سیرت رسول اکرم، ص7 (100)

ماہنامہ التزکیہ، جولائی2002، ص11 (101)

جواز الاحتفال، ص12 (102)

برکات میلاد شریف، ص3 (103)

ہمارے حضور، 17 (104)

زریں فرمودات، ص401 (105)

بھاگوات پران، باب2، شلوک 18 بہ حوالہ جان جاناں (106)

الدر المنتظم، ص89 (107)

انوار شریعت، ص9 (108)

قومی دائجسٹ، خصوصی نمبر 1989، ص50 (109)

الخطیب، ص121 (110)

فقہ السیرۃ، ص60 (111)

نشر الطیب از تھانوی، ص22 (112)

حیات رسول، ص92 (113)

محبوب کے حسن و جمال کا منظر، ص11 (114)

عید میلاد النبی کی شرعی حیثیت، ص1 (115)

کتب نصاب، انگریزی کتب اور بارہویں تاریخ؛

خالد دینیات برائے جماعت سوم (116)

دینیات برائے جماعت پنجم، ص55 (117)

الکتاب العربی برائے جماعت ہفتم، ص16 (118)

اردو کی ساتویں کتاب، ص17 (119)

اردو کی آٹھویں کتاب، ص3 (120)

اردو کی آٹھویں کتاب، ص18 (121)

اسلامیات نہم و دہم، ص88 (122)

مطالعہ پاکستان نہم و دہم، ص119 (123)

اسلامیات لازمی بی اے (124)

معیار اسلامیات لازمی بی اے (125)

اردو، دائرہ معارف اسلامیہ، 12، 19 (126)

مقالہ سیرت محمد رسول اللہ ﷺ، ص12 (127)

انگلش کی آٹھویں، ص1، پنجاب تیکسٹ بک بورڈ (128)

انگلش کی دسویں، ص5 (129)

سیرت رسول اللہ، آکسفورڈ یونیورسٹی لندن، ص69 (130)

دی لائف آف محمد، ص23 (131)

محمد دی فائنل میسنجر، ص50 (132)

پروس پیکٹس، 2010، ص162 (133)

(ملخصاً: بارہ ربیع الاول ایک جامع تحقیق)

जंग की तैय्यारी

हम जितना मर्ज़ी नज़र अंदाज़ कर लें लेकिन अब मुसलमानों को ज़रूरत है कि खुद को जंग के लिये तैय्यार करें।

हमारे दुश्मनों की कमी नहीं है जो चाहते हैं कि हमारा नामो निशान मिटा दिया जाये।

जब से मुसलमानों ने तलवारों से बेवफाई की है तब से दुश्मन की हिम्मत और बढ़ गयी है।

अभी हम ऐसी हालत में हैं कि अगर पत्थर से ठोकर खा कर गिरे तो दुश्मन हमारे सर पर पहाड़ गिरा देंगे।

ज़ालिम, जो चैन की नीन्द सो रहे हैं उन के लिये हमें डरावना ख्वाब बनने की ज़रूरत है। मज़लूमों को उम्मीद दिलाने की ज़रूरत है। दुश्मन की आँखों में आँखें डाल कर ये कहने की ज़रूरत है कि अब बस.....,

खुद को मज़बूत कीजिये, घर में अच्छा लोहा और सीमेंट इस्तिमाल करने के साथ साथ अपने बाज़ुओं में भी क़ुव्वत पैदा कीजिये।

अपने बच्चों को कम्प्यूटर सिखाने के साथ साथ लड़ने के पैतरे भी सिखायें।

फुज़ूल चीज़ों को खरीदने के बजाये हथियार इकठ्ठा कीजिये।

अगर अब भी होश में ना आये तो ये गफलत जिसे हम ने गले लगा रखा है, एक दिन हमें भारी क़ीमत चुकाने पर मजबूर कर देगी।

तीन दुआयें

बनी इसराईल के एक शख्स को हुक्म हुआ के तेरी तीन दुआयें क़ुबूल होंगी। (लिहाज़ा माँग क्या माँगता है।)

उस ने अपनी बीवी के लिये दुआ की कि वो सब से खूबसूरत औरत बन जाये। उस की बीवी बनी इसराईल की खूबसूरत तरीन औरत बन गयी मगर खूबसूरती के गुरूर में अपने शौहर की नाफ़रमान हो गयी।

उस शख्स ने तंग आकर अपनी दुआ के ज़रिये उसे कुतिया बना दिया।

उस के बेटों ने माँ की ये हालत देख कर बाप से सिफारिश की तो उस ने दुआ की : इलाही इसे पहले वाली शक्ल व सूरत अता कर दे। ये आखिरी दुआ क़ुबूल हुई और वो पहले जैसी हो गयी।

(تفسیر بغوی، ج2، ص180 بہ حوالہ آدابِ دعا)

इस में हमारे लिये सबक़ है कि दुआ सोच समझ कर करनी चाहिये। दुआ के वक़्त अच्छे लफ्ज़ों का इंतिखाब करना चाहिये।

फुज़ूल चीज़ों का सवाल करने से बचना चाहिये।

मेरी लड़की की शादी है

मै बहुत गरीब हूँ और मेरी लड़की की शादी है, आप सब मदद कीजिये.....,
सलाम फेरते ही कानों में ये आवाज आयी और ये पहली बार नहीं था बल्कि हफ्ते में एक दो बार ये सुनने को मिलता ही रहता है।
अगर मैं सहीह हूँ तो आप ने भी मस्जिदों में ऐसे लोगों को देखा होगा जो अपनी लड़की की शादी के लिये भीक माँगते हैं। लड़की को गाड़ी, जहेज़, नक़दी देने और बारातियों को खाना खिलाने के लिये एक गरीब शख्स आखिर माँगने के अलावा कर भी क्या सकता है।
मैने देखा है कि लोग पाँच दस रूपये दे कर समझते हैं कि मस'अला हल हो गया लेकिन ये मदद करने का सही तरीक़ा नहीं है।
अगर आप वाक़ई मदद करना चाहते हैं तो ये निय्यत कर लें कि जब मै शादी करूँगा तो एक रूपये भी नहीं लूँगा ताकि मेरी वजह से किसी और के साथ ऐसा ना हो।
अगर आप उसे हज़ार रूपये देते हैं और फिर अपनी या अपने बच्चों की शादी में लड़की वालों से उन चीज़ों का मुतालिबा करते हैं तो ये मदद नहीं बल्कि एक मज़ाक़ है।

आलिम और इश्क़

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि बगदाद का एक बहुत बड़ा आलिम अपने तलबा के साथ हज के सफर पर रवाना हुआ। दौराने सफर पानी ना मिलने की वजह से सब निढाल हो कर एक गिरजा घर के साये में आराम करने लगे। तलबा साये तले सो गये लेकिन उस्ताद साहब पानी की तलाश में निकल पड़े।

पानी की तलाश में घूम रहे थे कि एक ईसाई लड़की पर नज़र पड़ी जो चमकते हुये सूरज की तरह खूब सूरत थी। अब पानी को भूल कर उस्ताद साहब उसी की फिक्र में लग गये फिर उस लड़की के घर पहुँच कर उस के बाप से बात की तो उस ने कहा कि अगर तुम हमारा दीन क़ुबूल कर लो तो ही कुछ हो सकता है।

उस्ताद साहब ने नसरानियत को क़ुबूल कर लिया, इधर तलबा अभी सो रहे थे।

फिर जब शादी के लिये महर की बात आई तो लड़की ने कहा कि तुम इन खिंज़ीरों को एक साल तक चराओ तो यही मेरा महर होगा।

उस्ताद साहब ने कहा कि ठीक है लेकिन मेरी एक शर्त है कि एक साल तक तुम अपना चेहरा मुझ से नहीं छुपाओगी।

लड़की बोली कि मंज़ूर है। उस्ताद साहब ने खुतबा देने वाला असा उठाया और खिंज़ीरों को चराने निकल पड़े।

जब तलबा जागे तो ये सब जानने के बाद नीन्द के साथ उन के होश भी उड़ गये। फिर वोह उस्ताद साहब से मिलने गये तो देखा कि वोह खिंज़ीरों को इधर उधर जाने से रोक रहे हैं। तलबा ने उस्ताद साहब को क़ुरआन पाक, इस्लाम और नबी करीम ﷺ के फज़ाइल याद दिलाये तो उस ने कहा कि मुझ से दूर हो जाओ, मै ये सब तुम से ज़्यादा जानता हूँ। आखिर कार तलबा मायूस हो कर सफरे हज पर रवाना हो गये।

हज अदा करने के बाद वापसी पर जब उसी मक़ाम पर पहुँचे तो फिर उस्ताद साहब की हालत देखने गये कि शायद तौबा कर ली हो लेकिन उसे उसी हालत में पाया। तलबा ने नसीहत की लेकिन कोई फाइदा नहीं हुआ। एक बार फिर वोह हसरत ज़दा दिल लिये वापस हो लिये।

जब तलबा थोड़ी दूर निकल गये तो उन्होंने देखा कि पीछे कोई शख्स चीख चीख कर उन्हें रोक रहा है।
जब वो क़रीब आया तो मालूम हुआ कि वो कोई और नहीं बल्कि उस्ताद साहब थे।
उस्ताद साहब ने कहा कि मै गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, ये आज़माइश थी जिससे मै निकल गया।
एक दिन तलबा उस्ताद साहब के घर पर थे कि एक औरत ने दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा गया तो कहने लगी कि मुझे शैख से मिलना है, शैख से कहो कि फुलाँ राहिब की बेटी इस्लाम क़ुबूल करने आई है। फिर वोह अन्दर दाखिल हुई और बोली :
ए मेरे सरदार! आप के हाथ पर मुसलमान होने आई हूँ। जब आप चले गये तो मैने एक ख्वाब देखा जिस में हज़रते अली बिन अबी तालिब रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की ज़ियारत हुई। उन्होने फ़रमाया कि दीने मुहम्मदी के अलावा कोई दीन सच्चा नहीं फिर फ़रमाया कि अल्लाह त'आला ने तेरे ज़रिये एक बन्दे को आज़माया है चुनाँचे अब मै आप के पास आ गयी हूँ।
इस्लाम क़ुबूल करने के बाद शैख ने उन से निकाह कर लिया।

(انظر: بحر الدموع اردو، ص128، ملخصًا)

इस वाक़िये में कई अस्बाक़ हैं लेकिन एक बड़ा सबक़ ये है कि जब किसी को किसी से इश्क़ हो जाये तो उसे पाने के लिये हद से आगे ना बढ़े। अगर हद के अंदर रह कर हासिल ना कर पाये तो फिर सब्र करे और अपने रब से बेहतरी की उम्मीद रखे।
बेशक अल्लाह त'आला के लिये ये नामुमकिन नहीं कि किसी के दिल को फेर दे। अगर आप अपनी चाहत में मुख्लिस हैं तो अल्लाह के फज़्ल से कोई ना कोई रास्ता ज़रूर दिखाई देगा।

भोली भाली बीवी

हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अपनी बीवी के पहलू में लेटे हुये थे फिर वहाँ से उठे और हुजरे की तरफ़ तशरीफ ले गये जहाँ उन की बांदी थी और उस से मशगूल हो गये।

जब उन की बीवी ने बेदार हो कर उन को ना पाया तो तलाश के लिये निकली और देखा कि वो अपनी बांदी के पेट पर थे तो वहीं से वापस हो गयी और छुरी ले कर बांदी के पास गयी। (आज या तो बांदी या फिर मैं)

हज़रते अब्दुल्लाह ने कहा कि क्या बात है?

बीवी ने कहा कि क्या बात! समझ लो! मै अगर इस वक़्त तुम को ऐसी हालत में देखती जिस में तुम थे तो इस छुरी से इस (बांदी) की खबर लेती।

हज़रते अब्दुल्लाह ने कहा कि मैं कहाँ था? बीवी ने कहा कि इस बांदी के पेट पर, हज़रते अब्दुल्लाह ने कहा कि मै कहाँ था (और ये इस अंदाज़ में कहा कि बीवी को लगा कि आप इंकार कर रहे हैं।)

बीवी ने (चेक करने के लिये) कहा : अच्छा, हमें रसूलुल्लाह ﷺ ने हालत -ए- जनाबत में क़ुरआन पढ़ने से मना किया है (लिहाज़ा) अगर तुम सच्चे हो तो क़ुरआन पढ़ कर सुनाओ, हज़रते अब्दुल्लाह ने (क़ुरआन के लहज़े में) अरबी अशआर पढ़ डाले जब बीवी ने सुना तो क़ुरआन समझ कर कहा कि मैं अल्लाह पर ईमान लायी और मेरी आँखें झूटी हैं।

हज़रते अब्दुल्लाह कहते हैं कि जब मैने सुबह ये माजरा हुज़ूर ﷺ की खिदमत में अर्ज़ किया तो आप इतना मुस्कराये कि आप के दन्दान -ए- मुबारक ज़ाहिर हो गये।

(کتاب الاذکیاء لابن جوزی)

बीवी की आदत होती है कि वो शैहरों के पीछे पड़ी रहती हैं और मुहब्बत की निगाह से कम शक़ की निकाह से ज़्यादा देखती हैं।

शक़ करने के लिये इन्हें बस एक चिंगारी की ज़रूरत है फिर आग लगने में बिल्कुल देर नहीं लगती।

बीवियाँ वैसे तो अपने शक़ में आकर शौहरों की खूब जाँच परताल करती है लेकिन शौहर भी कम नहीं होते वोह भी हमेशा दो क़दम आगे रहते हैं।

चलो सब वुज़ू करें

एक मरतबा रसूलुल्लाह ﷺ महफिल में तशरीफ फरमा थे कि किसी की रीह (हवा) खारिज हो गयी। बदबू महसूस होने पर आप ﷺ ने फ़रमाया कि जिस शख्स से रीह खारिज हो गयी, उस को चाहिये कि उठ कर वुज़ू कर आये।

शर्म की वजह से वोह शख्स नहीं उठा तो आप ﷺ ने फिर फ़रमाया कि जिस शख्स से रीह खारिज हुई, उसे उठ कर वुज़ू कर लेना चाहिये, अल्लाह त'आला हक़ बयान करने से नहीं शरमाता।

हज़रते अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने कहा :

या रसूलुल्लाह! क्या हम सब उठ कर वुज़ू ना कर लें?

एक रिवायत के मुताबिक़ यह वाक़िया हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की महफिल में पेश आया।

(کتاب الاذکیاء لابن جوزی، ص44)

जब सब ने एक साथ उठ कर वुज़ू किया तो जिस की रीह खारिज हो गयी थी, वोह शर्मिन्दगी से बच गया और वुज़ू भी हो गया, इसे कहते हैं एक तीर से दो शिकार, अगर हम अपनी अक़ल से काम लें तो अपने सामने खड़े कई मस'अलों को बा आसानी हल कर सकते हैं।

चोर की दाढ़ी में तिनका

एक शख्स हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि ए अल्लाह के नबी! मेरे पड़ोस में ऐसे लोग हैं जो मेरी बतख चुराते हैं। आप अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के लिये एलान कराया (लोग हाज़िर हो गये)

फिर आप ने खुतबा दिया जिस के दौरान फ़रमाया :

तुम में एक शख्स अपने पड़ोसी के बतख चोरी करता है और ऐसी हालत में मस्जिद में आता है कि उस के सर पर बतख का पर होता है।

ये सुन कर चोर ने अपने सर पर हाथ फेरा। ये देख कर आप अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि पकड़ लो इस को, यही चोर है।

(کتاب الاذکیاء لابن جوزی، ص 31)

बे शक़ जो शख्स मुजरिम होता है, उस के अन्दर पकड़े जाने और सज़ा का खौफ होता है और यह खौफ़ बाहर भी नज़र आता है। अगर उस के खौफ़ का फाइदा उठाना आता हो तो उसे आसानी से पकड़ा जा सकता है।

माल कम औलाद ज़्यादा

हज़रत अबू सईद खुदरी फरमाते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जिस के पास माल कम हो, औलाद ज़्यादा हो, नमाज़ अच्छी और किसी मुसलमान की गीबत ना करे तो क़ियामत के दिन वोह आयेगा और मेरे साथ होगा।

(انظر: مسند ابو یعلی اردو، جلد اول، ص555، ر986)

अब ज़रा मुआशरे की तरफ देखें :
माल ज़्यादा है, औलाद कम हैं, नमाज़ बिल्कुल अच्छी नहीं है और गीबत करना तो रोज़ाना का मामूल है।

मैने कई लोगों को देखा है कि चालीस पचास लाख रूपये खर्च कर के आली शान घर बनाते हैं और रहने वाले सिर्फ चार से पाँच अफराद होते हैं जिन में दो मियाँ बीवी और दो तीन बच्चे, यह बड़ी अजीब बात है।

तमन्नाओं की जंग

एक मरतबा वलीद बिन अब्दुल मलिक ने बदीह से कहा कि आओ तमन्नाओं में मुक़ाबला करें (यानी हम दोनों अपनी अपनी तमन्नायें बयान करेंगे और जिसकी तमन्ना बड़ी होगी वो जीतेगा।)

बदीह ने कहा : आप मुझ पर हरगिज़ गालिब ना आ सकेगे। वलीद ने कहा कि मै गालिब हो कर रहूँगा और तू जिस तमन्ना का इज़हार करेगा मै उस से दो गुनी का इज़हार करूँगा।

बदीह ने कहा : बहुत अच्छा, तो मेरी तमन्ना ये है कि मुझे सत्तर (70) क़िस्म के अज़ाब दिये जायें और मुझ पर अल्लाह हजारों लानतें भेजे।

वलीद ने कहा कमबख्त तेरा बुरा हो, बस तू ही गालिब रहा। (यानी तू इस मुक़ाबले में जीत गया।)

(کتاب الذکیاء لابن جوزی)

यह वाक़िया तो तफरीह के लिये था मगर हमारे दरमियान भी तमन्नाओं का मुक़ाबला चल रहा है, किसी ने गाड़ी खरीदी तो हम उस से महँगी खरीदेंगे।

किसी ने मोबाइल खरीदा तो हम आई फ़ोन खरीदेंगे।

किसी की शादी में गाने वाला आया तो हम नाचने वाली बुलायेंगे ।

किसी की शादी में घोड़ा आया तो हम कुछ नया करने के लिये डोली मंगवायेंगे।

किसी ने तक़रीर में कोई नई रिवायत बयान की तो जीतने के लिये हम भी कोई नई रिवायत घढ़ के बयान करेंगे, लेकिन ये भूल जाते हैं कि इस मुक़ाबले के चक्कर में किस हद तक गिर चुके हैं।

सभी तो बाजे बजा रहे हैं

ये तो हक़ीक़त है कि मीलादे मुस्तफ़ा पर "सिवाए इबलीस के जहाँ में सभी तो खुशियाँ मना रहे हैं" क्योंकि हुज़ूर ﷺ की विलादत की खुशी मनाने से इबलीस और उस के चेलों को ही एतराज़ हो सकता है।

लेकिन आज कल जो खुशी मनाने का तरीक़ा लोगों ने अपना रखा है, इसे देख कर ये कहना भी ठीक होगा कि "सिवाए उलमा के इस जहाँ में सभी तो बाजे बजा रहे हैं"।

उलमा मना कर कर के थक चुके हैं लेकिन आवाम सुनती कहाँ है, इन्हें तो बस बाजा बजाना है तो बजाना है।

जुलूसे मुहम्मदी उस जुलूस को कहते हैं जो शरीअते मुहम्मदी के मुताबिक़ हो। लेकिन हमारे जुलूसों में तो शरीअत कहीं नज़र ही नहीं आती। नमाज़ें छोड़ कर जलसों में घूमना, म्यूज़िक की धुन पर उछल कूद करते हुये नारे बाजी करना, छतों और दरवाज़ों पर खड़ी औरतों पर नज़रें बांधना और इन सब को मीलाद की खुशी का नाम देना बिल्कुल गलत है। इस से इबलीस राज़ी हो सकता है, अल्लाह और उस के रसूल नहीं।

खुशी मनाने का ये तरीक़ा भी हो सकता है कि हम अपने नबी की सीरत पर लिखी गई किताबों का मुताला करें और अगर अल्लाह ने मालो दौलत से नवाज़ा हो तो दूसरों को भी किताब तोहफे में पेश करें, गरीबों को खाना खिलाएं, ज़रूरत मंदों की मदद करें, गरीब लड़कियों की शादी करवा दें, इंशा अल्लाह हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ हम से खुश हो जायेंगे।

एक हमारे बच्चे हैं

मामुन रशीद ने अपने एक छोटे बच्चे को देखा जिस के हाथ में हिसाब का रजिस्टर था, तो पूछा कि तेरे हाथ में ये क्या है?

बच्चे ने जवाब दिया :

एक ऐसी चीज़ है जिस से ज़हानत क़वी होती है और गफलत से बेदारी हासिल होती है और वहशत से उन्स।

मामुन ने जवाब सुन कर कहा कि मै अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ जिस ने मुझ को ऐसा बच्चा अता किया जो अपनी उम्र के मुनासिब अपने जिस्म की आँख से ज़्यादा अपनी अक़्ल की आँख से देखता है।

(کتاب الاذکیاء لابن جوزی)

एक हमारे बच्चे हैं जो अपनी आँख से ज़्यादा अपने मोबाइल फोन के केमरा से देखते हैं और ज़िन्दगी का एक हिस्सा सेल्फी लेने में ही लगा देते हैं।

कुछ तो पढ़ाई भी सिर्फ डिग्री के लिये करते हैं ताकि रिश्ता तय होते वक़्त कहा जा सके कि "लड़का/लड़की मेट्रिक पास है"।

क्या हुज़ूर ﷺ की वफ़ात बारह रबी उल अव्वल को हुई?

मीलादुन्नबी ﷺ पर ऐतराज़ करने वाले यह भी ऐतराज़ करते हैं कि चूँकि हुज़ूर ﷺ की वफ़ात बारह रबीउल अव्वल को हुई, इस लिये मीलाद की खुशी मनाना सहीह नहीं है।

पहली बात तो यह है कि हुज़ूर ﷺ की वफ़ात बारह रबीउल अवल को नहीं हुई और दूसरी बात यह कि अगर होती भी तो इस वजह से मीलाद की खुशी मनाने पर कोई फर्क़ नहीं पड़ता।

बुखारी शरीफ़ की हदीस के मुताबिक़ हुज़ूर ﷺ की वफ़ात रबीउल अव्वल के महीने में पीर के दिन हुई और जिस साल हज्जतुल वदा था, उस साल यौम ए अरफ़ा जुमा के दिन था यानी ज़ुलहिज्जह की नौ तारीख जुमा को थी।

अब रबीउल अव्वल को तीन महीने रह जाते हैं, ज़ुल हिज्जह, मुहर्रम और सफर, अब हिसाब लगाया जाये तो रबीउल अव्वल के महीने में पीर का दिन किसी भी तरह बारह तारीख को नहीं आता।

अगर तीनों महीने तीस दिन के तसलीम कर लिये जायें तो पीर के दिन चार रबी उल अव्वल होगी और अगर तीनों महीने उन्तीस के तसलीम कर लिये जायें तो पीर के दिन दो रबीउल अव्वल होगी और अगर दो महीने तीस के और एक उन्तीस का तसलीम किया जाये तो पीर के दिन सात रबीउल अव्वल होगी और अगर ये फर्ज़ किया जाये कि दो महीने उन्तीस के और एक महीना तीस का था (और यही सहीह भी है) तो पीर के दिन एक रबीउल अव्वल होगी। किसी भी तरह हिसाब लगाया जाये तो पीर का दिन बारह रबीउल अव्वल को नहीं आता। जिस से साफ ज़ाहिर है कि वफ़ात बारह तारीख को नहीं हुई।

कई उलमा-ए- अहले सुन्नत ने भी तसरीह की है कि तारीखे वफ़ात या तो एक रबीउल अव्वल है या दो, हत्ता कि ऐतराज़ करने वालों के उलमा ने भी वाज़ेह अलफाज़ में लिखा है कि किसी तरह हुज़ूर ﷺ की वफ़ात बारह रबीउल अव्वल को नहीं हुई। हवाले ज़ेल में नक़्ल किये जाते हैं।

انظر: الطبقات الکبری، ج2، ص208، 209،)

دلائل النبوۃ، ج7، ص235،

مختصر تاریخ دمشق، ج2، ص387،

تہذیب الکمال، ج1، ص55،

الاشارۃ الی سیرت المصطفی، ص351،

الروض الانف مع السیرۃ النبویۃ، ج4، ص439، 440،

البدایہ والنھایہ، ج4، ص228،

فتح الباری، ج8، ص473، 474،

عمدۃ القاری، ج18، ص60،

التوشیح، ج4، ص143،

سبل الہدی والرشاد، ج12، ص305،

المرقاۃ، ج1، ص238،

انسان العیون، ج3، ص473،

سیرت رسول عربی، ص226،

اشرف علی تھانوی، نشر الطیب، ص241،

(شبلی نعمانی، سیرت النبی، ج2، ص106، 107

(ماخذ: علامہ غلام رسول سعیدی، تبیان القرآن، ج7، ص576 تا578)

ए मुसलमानों! तुम कैसे सुकून से हो?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहीमहुल्लाह फरमाते हैं :

كيف القرار و كيف يهدا مسلم

والمسلمات مع العدو المعتدى

किसी मुसलमान को कैसे क़रार हासिल हो और वो क्यों कर पुर सुकून हो सकता है जब कि मुसलमान औरतें सरकश दुश्मनों की क़ैद में हैं।

الضاربات خدودهن برنته

الداعيات نبيهن محمد

जो (या'नी वो औरतें) चीखो पुकार करते हुये अपने रुखसार पीटती हैं और अपने नबी सैय्यिदुना मुहम्मद ﷺ को पुकारती हैं।

القائلات اذا خشين فضيحة

جهد المقالة ليتنالم نولد

ज़िल्लत व रुसवाई के खौफ़ से मजबूर हो कर सख्त तरीन बात कहती हैं कि ए काश हम पैदा ही ना हुये होतीं!

ما تسطيع وما لها من حيلة

الا التستر من اخيها باليد

ना तो वो कोई ताक़त रखती हैं और ना तो कोई हीला कर सकती हैं सिवाये इस बात के कि हाथ के साथ अपने भाई से पर्दा कर लें।

ايها الناسک الذى لبس الصوف

واضحى يعدفى العباد

ए नर्म लिबास पहनकर इबादत गुज़ारों में शामिल होने वाले सूफी।

الزم الثغر والتعبد فيه

ليس بغداد مسكن الزهاد

सरहद को लाज़िम पकड़ और वहीं इबादत में मशगूल हो जा क्योंकि बगदाद तो ज़ाहिदों का ठिकाना नहीं है।

ان البغداد للملوک محل

و مناخ للقاری الصیاد

बेशक बगदाद तो बादशाहों का महल व मस्कन है और शिकारी उलमा की शिकार गाह है।

(اسلام کا تصور جہاد)

आज जब कि मुसलमानों पर ज़ुल्म किया जा रहा है, ऐसे में हमें किस तरह सुकून हासिल हो सकता है।

हमें मज़्लूमों के दर्द को महसूस करना होगा और जालिमों से जंग की तैय्यारी करनी होगी वरना वो दिन दूर नहीं जब हम भी इसी ज़ुल्म के शिकार होंगे जिस के आज हमारे भाई और बहनें हैं।

लोग आसान समझते है मुसलमान होना

नबूवत के तेरहवें साल जब कई अंसार हुज़ूर ﷺ के हाथों पर बैअत के लिए तैय्यार हुए तो अब्बास बिन उबादा अंसारी ने उन से कहा तुम्हे ये भी खबर है कि तुम मुहम्मद ﷺ से किस चीज़ पर बैअत कर रहे हो, ये अरब व अजम से जंग पर बैअत है (यानी तुम मुसलमान हो रहे हो लेकिन जान लो के अब तुम्हे अरब व अजम से जंग करनी होगी लिहाज़ा) अगर तुम्हारा खयाल ये है कि तुम्हारे माल ताराज हो (यानी लुट जाए) और तुम्हारे अशराफ (यानी बड़े लोग) क़त्ल हो फिर तुम उन का साथ छोड़ दोगे तो अभी से छोड़ दो और अगर ऐसी मुसीबत पर भी साथ दे सको तो बैअत कर लो सब ने कहा हम इसी बात पर बैअत करते है।

(علامہ نور بخش توکلی، سیرت رسول عربی، ص100)

मुसलमान होने का मतलब मैदाने जंग में कदम रखना है।
इस्लाम इस का नाम नही की एक तरफ ईमान का दावा किया जाए और दूसरी तरफ कुफ्र से यारी की जाए।
कुफ्र व काफिर दोनों हमारे दुश्मन है।
मौत हमारे लिए शहादत है तो खौफ़ कैसा? जब हम हक़ पर है तो फिर डरना कैसा ? हमे बस जंग शुरू करनी है फिर अल्लाह हमारे साथ है।

वो फिर भी लड़े

लशकर -ए- इस्लाम खैबर की तरफ़ बढ़ रहा है, रास्ते में हुज़ूर ﷺ ने खाना तलब फ़रमाया तो सिर्फ सत्तू पेश की गई।

उसे पानी में घोल कर खाया गया ऐसी हालत थी मगर वो फिर भी लड़े.....,।

जंगे उहद जब शहीदों को दफन करने की बारी आयी तो कपड़े की क़िल्लत का ये आलम था कि उमूमन दो-दो, तीन-तीन को मिला कर एक ही कपड़े में दफन किया गया। ऐसी हालत है मगर फिर भी वो लड़े.....,।

हज़रते अमीर -ए- हमज़ा को दफन किया गया तो चादर इतनी छोटी थी कि मुँह ढाँपने पर क़दम खुल जाते और क़दमों को ढाँपते तो मुँह खुल जाता था। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मुँह को ढाँप दो और क़दमों पर पत्ते डाल दो। ऐसी हालत है मगर वो फिर भी लड़े.....,।

एक सहाबी लंगड़े थे, उन से कहा गया कि आप जंग के लिये ना जाए, उन्होने कहा कि मुझे उम्मीद है कि मै इस तरह जन्नत में टहला करुँगा और जंगे उहद में शहीद हो गये। ज़रा सोचें कि वो लंगड़े हैं मगर वो फिर भी लड़े.....,।

हज़रते हंज़ला अंसारी का जिस रात निकाह हुआ उस की सुबह जंग का ऐलान हो गया। आप ने गुस्ल के लिये सर धोया ही था कि ऐलान सुन कर बगैर गुस्ल के जंग में शरीक़ हो गये।

गौर करें कि शादी को एक दिन भी नहीं हुआ मगर फिर भी वो लड़े.....,।

(انظر: کتب سیرت)

आज हमारे पास कुछ नहीं, कम से कम दफन करने का इन्तिज़ाम तो है लेकिन दीन के नाम पर लड़ने को तैय्यार नहीं।

हर शख्स चाहता है कि बस अमन की बात हो लेकिन जान लेना चाहिये कि वो अमन की ज़ुबान नहीं समझते, उन्हें तो बस एक ही ज़ुबान समझ आती है और वो है तलवार की ज़ुबान।

तुम्हारे पास तुम्हारा नबी है

जंगे हुनैन के बाद जो माले गनीमत हासिल हुआ उसे हुजूर ﷺ ने तुलका (जिन्हें फत्हे मक्का के दिन हुजूर ने माफ किया था) और मुहाजिरीन में तकसीम फरमा दिया और अंसार को कुछ ना दिया।

इस पर अन्सार को रंज हुवा और इन में से बाजे कहने लगे : "खुदा रसूलल्लाह ﷺ को मुआफ करे, वोह कुरैश को अता फरमाते हैं और हम को महरूम रखते हैं हालांकि हमारी तल्वारों से करैश के खून के कतरे टपकते हैं और बाज़ बोले : "जब मुश्किल पेश आती है तो हमें बुलाया जाता है और गनीमत औरों को दी जाती है।"

हुजूर ﷺ ने येह चर्चा सुना तो अन्सार को तलब फ़रमाया। एक चमड़े का खैमा नस्ब किया गया जिस में आप ने अन्सार के सिवा किसी और को न रहने दिया।

जब अन्सार जमा हो गए तो आप ﷺ ने पूछा कि "वोह क्या बात है जो तुम्हारी निस्बत मेरे कानो में पहुंची है।"

अन्सार झूट न बोला करते थे कहने लगे कि सच है जो आप ने सुना मगर हम में से किसी दाना ने ऐसा नहीं कहा बल्कि नौ खैज़ जवानों ने ऐसा कहा था।

येह सुन कर आप ﷺ ने हम्दो सना के बाद यू खिताब फरमाया :

ऐ गुरौहे अन्सार ! क्या येह सच नहीं कि तुम गुमराह थे, खुदा ने मेरे जरीए से तुम को हिदायत दी और तुम परागन्दा (बिखरे) थे, खूदा ने मेरे जरीए से तुम को जम्अ कर दिया और तुम

मुफ़्लिस थे, खुदा ने मेरे जरीए से तुम को दौलत मन्द कर दिया।

आप येह फ़रमाते जाते थे और अन्सार हर फुकरे पर कहते जाते थे कि "खुदा और रसूल का एहसान इस से बढ़ कर है।"

आप ﷺ ने फरमाया कि तुम मुझे जवाब क्यूं नहीं देते ?

अन्सार ने अर्ज किया या रसूलल्लाह ﷺ हम क्या जवाब दें खुदा और रसूल का एहसान और फज़्ल है।

आप ﷺ ने फ़रमाया : ब खुदा ! अगर तुम चाहो तो येह जवाब दो मैं साथ साथ तुम्हारी तस्दीक करता जाऊंगा :

आप हमारे पास इस हाल में आए कि लोगों ने आपकी तक्ज़ीब की थी, हम ने आपकी तस्दीक की,
लोगों ने आप का साथ छोड़ दिया था, हम ने आप की मदद (खिदमत) की, लोगों ने आप को मक्का से निकाल दिया था हम ने आप को पनाह दी, आप मुफ़्लिस थे हम ने जानो माल से आपकी हमदर्दी की।
फिर फ़रमाया कि मैं ने तालीफे कुलूब (यानी लोगों के दिलों को माइल करने) के लिये अहले मक्का के साथ येह सुलूक किया
है।
ऐ अन्सार ! क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं कि लोग ऊंट, बकरियां (गनीमत का माल) ले कर जाएं और तुम रसूलुल्लाह को ले कर घर जाओ। अल्लाह की कसम ! तुम जो कुछ ले जा
रहे हो वोह इस से बेहतर है जो वोह ले जा रहे हैं। अगर लोग किसी वादी या दर्रे में चलें तो मैं अन्सार की वादी या दर्रे में चलूंगा।
येह सुन कर अन्सार पुकार उठे :
या रसूलल्लाह ﷺ हम राज़ी हैं, और उन पर इस कदर रिक्कत तारी हुई कि रोते रोते दाढ़ियां तर हो गई।

(علامہ نور بخش توکلی، سیرت رسول عربی، ص236)

थोड़ा सा माले गनीमत क्या है, अगर एक तरफ पूरी दुनिया और उस की दौलत मौजूद हो और दूसरी तरफ हुजूर हों तो ये फैसला करने में कोई दुश्वारी नहीं होगी के हमे किधर जाना है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

दर्से बुखारी बिद्द'अत

हमारे शहर में एक जगह देवबन्दियों का इज्तिमा हुआ जिस में खिताब करते हुये एक देवबन्दी मुफ्ती ने कहा कि ईद मीलादुन्नबी पर जश्न मनाना बिद्द'अत है क्योंकि दीन में कोई भी नया काम दीन समझ कर करना बिद्द'अत है!

फिर मज़ीद वजाहत करते हुये उसने कहा कि नया काम वही बिद्द'अत है जिसे दीन समझ कर किया जाये और जो काम दीन समझ कर ना किया जाये उस पर ना सवाब है ना इताब है और ऐसा काम करने से कोई फाइदा नहीं लिहाज़ा ऐसे कामों से बचना चाहिये।

अब इन से पूछा जाये कि "दर्से बुखारी" बिद्द'अत है या नहीं? अगर जवाब में ये कहें कि हम इसे दीन समझ कर नहीं करते तो बा क़ौल इनके इस में कोई सवाब नहीं यानी "दर्से बुखारी बिना सवाब के" और जब कोई सवाब ही नहीं तो फिर इस में वक़्त लगा कर क्या फाइदा? और अगर जवाब ये हो कि बिद्द'अत नहीं बल्कि एक अच्छा काम है जिस में लोगों को हुज़ूर ﷺ की हदीसें बताई और समझायी जाती हैं तो हम कहेंगे कि मीलाद में भी तो हुज़ूर ﷺ की सीरत और उनसे निस्बत रखने वालों का ज़िक्रे खैर होता है, यहाँ दोहरा रवैय्या क्यों?

मीलाद के नाम प अगर कोई ढोल ताँसे बजा कर नाचता है तो ये उस का ज़ाती मामला है, हम इसके हरगिज़ क़ाइल नहीं।हमारे नज़दीक मीलाद मनाना ना फर्ज़ है ना वाजिब बल्कि मुस्तहब है जिसे ना करने वाला गुनाहगार नहीं होता लेकिन जो इसे बिद्द'अत कहे वो ज़रूर इस शेर का मिस्दाक़ है कि :

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईडन रबीउल अव्वल
सिवाये इब्लीस के जहाँ में सभी तो खुशियाँ मना रहे हैं।

अब्दे मुस्तफ़ा

क्या आप जानते हैं कि सहाबए किराम में से कोई बहरा न था!

हाफ़िज़ इब्ने हजर (मुतवफ़्फ़ा 852 हिजरी) फ़रमाते हैं कि हुजूर ﷺ की हयात शरीफ़ में सहाबए किराम में से कोई असम या'नी बहरा न था और येह आप ﷺ की करामात में से है क्यूंकि आप उन के लिये अहकामे इलाही के मुबल्लिग थे और बहरापन इस काम के सहूलत के साथ होने से माने (रुकावट) होता है बर अक्स ना बीनाई के कि वोह मानेअ नहीं होती। यानी जो अंधा होता है वो सुन तो सकता ही है।

(نسیم الریاض، ج1، ص397 بہ حوالہ سیرت رسول عربی، ص260)

अब्दे मुस्तफ़ा

आप भी हैं अब्दे मुस्तफ़ा

आप अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल से जुड़े हुये हैं।
यह नाम "अब्दे मुस्तफ़ा" किसी एक शख्स का नहीं है बल्कि हर मुसलमान अब्दे मुस्तफ़ा है।
आप भी अब्दे मुस्तफ़ा हैं।

अगर कोई खुद को अब्दे मुस्तफ़ा (मुस्तफ़ा ﷺ का गुलाम) नहीं समझता तो वो ईमान की मिठास नहीं पा सकता।
इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा खान रहीमहुल्लाह अपने आप को अब्दे मुस्तफ़ा लिखा करते थे।
अल्लाह का शुक्र है कि हम भी अब्दे मुस्तफ़ा हैं।

हम तो हैं अब्दे मुस्तफ़ा, तो क्या आप भी हैं अब्दे मुस्तफ़ा?
कहें कि हाँ हम भी हैं अब्दे मुस्तफ़ा और

खौफ़ ना रख रज़ा ज़रा तू तो है अब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिये अमान है तेरे लिये अमान है।

देव के बन्दों से हम को क्या गरज़
हम हैं अब्दे मुस्तफ़ा, फिर तुझ को क्या।

(इमामे अहले सुन्नत)

अब्दे मुस्तफ़ा

एक रिवायत अनेक नसीहत

इमाम सुयूती रहीमहुल्लाह लिखते हैं :
हज़रते अबुल अब्बास मुस्तगफ़िरी रहीमहुल्लाह बयान करते हैं कि मैं तलबे इल्म के लिये मिस्र गया, वहां पर हदीस के बहुत बड़े आलिम हज़रते अबू हामिद मिस्री से हदीस -ए- खालिद बिन वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु सुनाने की दरख्वास्त की तो उन्होने मुझे एक साल के रोज़े रखने का हुक्म फ़रमाया।

उन के इस हुक्म पर अमल के बाद दोबारा हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो उन्होंने अपनी सनद से हदीस -ए- ख़ालिद बिन वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु सुनाई।
चुनान्चे, हज़रते सैय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि एक आ'राबी ने बारगाहे रिसालत मआब में हाज़िरी दी और अर्ज़ की :
दुनिया व आख़िरत के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं।
रसूल -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : पूछो ! जो पूछना चाहते हो।

आने वाले ने अर्ज़ की : मैं सब से बड़ा आलिम बनना चाहता हूं।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह से डरो, सब से बड़े आलिम बन जाओगे।

अर्ज़ की : मैं सब से ज़्यादा गनी बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : क़नाअत इख्तियार करो, गनी हो जाओगे।

अर्ज़ की : मैं लोगों में सब से बेहतर बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में सब से बेहतर वोह है जो दूसरों को नफ़्अ पहुंचाता हो, तुम लोगों के लिये नफ़्अ बख़्श बन जाओ।

अर्ज़ की : मैं चाहता हूँ कि सब से ज़्यादा अद्ल करने वाला बन जाऊँ।

करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने लिये पसन्द करते हो वही दूसरों के लिये भी पसन्द करो, सब से ज़्यादा आदिल बन जाओगे।

अर्ज़ की : मैं बारगाहे इलाही में खास मक़ाम हासिल करना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : ज़िक्रुल्लाह की कसरत करो, अल्लाह त'आला के ख़ास बन्दे बन जाओगे।

अर्ज़ की : अच्छा और नेक बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह त'आला की इबादत यूँ करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तो तुम्हें देख ही रहा है।

अर्ज़ की : मैं कामिल ईमान वाला बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो, कामिल ईमान वाले बन जाओगे।

अर्ज़ की : (अल्लाह त'आला का) फ़रमां बरदार बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह त'आला के फ़राइज़ का एहतिमाम करो, उस के मुतीअ (व फ़रमां बरदार) बन जाओगे।

अर्ज़ की : (रोज़े कियामत) गुनाहों से पाक हो कर अल्लाह त'आला से मिलना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फरमाया : गुस्ले जनाबत खूब अच्छी तरह किया करो, अल्लाह त'आला से इस हाल में मिलोगे कि तुम पर कोई गुनाह न होगा।

अर्ज़ की : मैं चाहता हूँ कि रोज़े कियामत मेरा हश्र नूर में हो।

करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : किसी पर ज़ुल्म मत करो, तुम्हारा हश्र नूर में होगा।

अर्ज़ की : मैं चाहता हूँ कि अल्लाह त'आला मुझ पर रहम फ़रमाये।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अपनी जान पर और मख्लूक़े ख़ुदा पर रहम करो, अल्लाह तआला तुम पर रहूम फ़रमायेगा।

अर्ज़ की : गुनाहों में कमी चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करो, गुनाहों में कमी होगी।

अर्ज़ की : ज़्यादा इज़्ज़त वाला बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : लोगों के सामने अल्लाह त'आला के बारे में शिकवा व शिकायत मत करो, सब से ज़्यादा इज़्ज़तदार बन जाओगे।

अर्ज़ की : रिज़्क में कुशादगी चाहता हूं।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : हमेशा बा वुज़ू रहो, तुम्हारे रिज़्क में फ़राखी आएगी।

अर्ज़ की : अल्लाह व रसूल का महबूब बनना चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह व रसूल की महबूब चीज़ों को महबूब और ना पसन्द चीज़ों को ना पसन्द रखो।

अर्ज़ की : अल्लाह तआला की नाराज़ी से अमान का तलबगार हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : किसी पर गुस्सा मत करो, अल्लाह त'आला की नाराज़ी से अमान पा जाओगे।

अर्ज़ की : दुआओं की क़ुबूलिय्यत चाहता हूँ।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : हराम से बचो, तुम्हारी दुआयें क़ुबूल होंगी।

अर्ज़ की : चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे लोगों के सामने रुस्वा न फ़रमाये।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फरमाया : अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करो, लोगों के सामने रुस्वा नहीं होगे।

अर्ज़ की : चाहता हूँ कि अल्लाह त'आला मेरी पर्दापोशी फ़रमाए।
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फरमाया : अपने मुसलमान भाइयों के ऐब छुपाओ, अल्लाह तुम्हारी पर्दापोशी फरमायेगा।

अर्ज़ की : कौन सी चीज़ मेरे गुनाहों को मिटा सकती है?
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : आँसू, आजिज़ी और बीमारी।

अर्ज़ की : कौन सी नेकी अल्लाह के नज़दीक सब से अफ़ज़ल है?
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अच्छे अख्लाक, तवाज़ोअ, मसाइब पर सब्र और तक़्दीर पर राज़ी रहना।

अर्ज़ की : सब से बड़ी बुराई क्या है? कौन सी बुराई अल्लाह के नज़दीक सब से बड़ी है?
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बुरे अख़्लाक़ और बुख्ल।

अर्ज़ की : अल्लाह त'आला के गज़ब को क्या चीज़ ठन्डा करती है?
करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : चुपके चुपके सदक़ा करना और सिलए रेहमी।

अर्ज़ की : कौन सी चीज़ दोज़ख़ की आग को बुझाती है?

करीम आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : रोज़ा।

(جامع الاحادیث، ج19، ص405، ح14922 بہ حوالہ اعرابی کے سوالات اور عربی آقا کے جوابات)

इस हदीस के रावी हज़रते सय्यिदुना अबुल अब्बास मुस्तगफ़िरी रहीमहुल्लाह का शौके इल्म देखिए कि एक हदीस सुनने के लिये एक साल के रोज़े रखने पर तैय्यार हो गए। इस में उन के लिये दर्स है जो फ़ी ज़माना आसानी होने के बावजूद इल्मे दीन सीखने से जी चुराते हैं।

इस एक रिवायत में नसीहत के कई मोती मौजूद हैं जिन में से हर एक में दुनिया और आखिरत की भलाईयां समाई हुई हैं।

अब्दे मुस्तफ़ा

इल्म की चाबी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे खुदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है : इल्म ख़ज़ाना है और सुवाल उस की चाबी है, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए सुवाल किया करो क्यूंकि इस (या'नी सुवाल करने की सूरत) में चार अफ़राद को सवाब दिया जाता है। सुवाल करने वाले को, जवाब देने वाले को, सुनने वाले और उन से महब्बत करने वालों को।

(فردوس الاخبار، ح4011)

सवाल करने का ये मतलब नहीं है कि आप फिजूल के सवालात से खुद को और दूसरों को परेशान करें बल्कि वही सवाल करें जिस का जवाब आप के लिए जानना जरूरी हो।

अब्दे मुस्तफ़ा

दीन में दाढ़ी है, दाढ़ी में दीन नहीं

कहते हैं कि जब किसी का भला ना कर सको तो बुरा भी ना करो। अगर आप किसी को नेकियों की दावत नहीं दे सकते तो कम से कम ऐसी बातें कर के नेकियों से दूर भी ना करें कि दीन में दाढ़ी है, दाढ़ी में दीन नहीं।
फिर ये भी कहा जा सकता है कि दीन में नमाज़ है, नमाज़ में दीन नहीं,
दीन में रोज़ा है, रोज़े में दीन नहीं
दीन में हलाल व हराम है, हलाल व हराम में दीन नहीं,,,,,,,, फिर दीन में बचेगा क्या? ये तो फिर नाम का दीन बचेगा जिस में हर शख्स यही कह कर अमल से जान छुड़ायेगा कि दीन में अमल है, अमल में दीन नहीं।

एक तो ऐसे ही दाढ़ी वालों की ज़ियारत बहुत कम होती है ऊपर से ऐसी बातें करना दाढ़ी मुंडाने वालों का साथ देने के बराबर है।
यह बातें जिस ने भी कहीं है वोह शायद लोगों को "दीन में" मौजूद चीज़ों से दूर कर के लोगों को "दीन से" दूर करना चाहता है और फिर किसी "नये दीन" की तरफ़ ले जाना चाहता है जिस में सब जाइज़ हो।

दीन सिखाने वाले आप को इस दौर में बहुत मिलेंगे। जिसे खुद कुछ नहीं पता वो भी दीन सिखाने की कोशिश कर रहा है लिहाज़ा होशियार रहें और समझ बूझ लें कि आप दीन किस से सीख रहे हैं, कहीं ऐसा तो नहीं कि वो दीन के नाम पर आप को कुछ और सिखा रहा है।

अब्दे मुस्तफ़ा

उँगलियों की करामत पे लाखों सलाम

सना 6 हिजरी में रसूल -ए- अकरम ﷺ उमरह का इरादा कर के मदीनए मुनव्वरह से मक्कए मुकर्रमा के लिये रवाना हुए और हुदैबिया के मैदान में उतरे। आदमियों की कसरत की वजह से हुदैबिया का कुआँ खुश्क हो गया और हाज़िरीन पानी के एक एक क़तरे के लिये मोहताज हो गए। उस वक़्त रहमते आलम, नूरे मुजस्सम ﷺ का दरियाए रहमत जोश में आ गया और आप ने एक बड़े प्याले में अपना दस्ते मुबारक रख दिया तो आप ﷺ की मुबारक उंगलियों से इस तरह पानी की नहरें ज़ारी हो गई कि पन्दरह सौ का लश्कर सैराब हो गया। लोगों ने वुज़ू व गुस्ल भी किया जानवरों को भी पिलाया तमाम मशकों और बरतनों को भी भर लिया। फिर आप ने प्याले में से दस्ते मुबारक को उठा लिया और पानी ख़त्म हो गया।

हज़रते जाबिर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से लोगों ने पूछा कि उस वक़्त तुम लोग कितने आदमी थे?
तो उन्हों ने फ़रमाया कि हम लोग पन्दरह सौ की तादाद में थे। मगर पानी इस क़दर ज़्यादा था कि,
अगर हम लोग एक लाख भी होते तो सब को यह पानी काफ़ी हो जाता।

مشکوٰۃ، ج2، ص532، باب المعجزات،
وبخاری، ج1، ص504، علامات النبوۃ،
وانظر سیرت مصطفی از علامہ عبد المصطفی اعظمی رحمہ اللہ

अल्लामा इब्ने अरबी लिखते हैं कि हुजूर ﷺ की उँगलियों से पानी का जारी होना सिर्फ आप की खुसूसियत है और किसी के लिए ये साबित नहीं।

(القبس فی شرح موطا مالک بن انس بہ حوالہ نعم الباری، ج6، ص636)

इसी हसीन मंज़र की तस्वीर कशी करते हुए आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रहीमहुल्लाह ने क्या खूब फ़रमाया :

उंगलिया हैं फैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्दिया पंजाबे रहमत की जारी हैं वाह वाह

अब्दे मुस्तफ़ा

मंगोल, राफ़ज़ी और खिलाफते अब्बासिया

कहा जाता है कि तातारियों (मंगोलों) के फितने से बढ़ कर दुनिया में कोई फितना वक़ूअ में नहीं आया। उन ज़ालिमों ने जब बगदाद पर हमला किया तो तक़रीबन अट्ठारह लाख लोगों को क़त्ल कर दिया! इस की मुख्तसर कैफियत ये थी कि जब चंगेज़ खान के पोते हलाकू ने बगदाद पर लशकर कशी की तो उस वक़्त बगदाद में खानदाने अब्बासिया का आखिरी खलीफा मुअतसिम बिल्लाह मसनदे खिलाफत पर मुतमक्किन था।

खलीफा मुअतसिम बिल्लाह का वज़ीर राफज़ी था जिस के दिल में इस्लाम और अहले इस्लाम (अहले सुन्नत) के लिये बुग्ज़ था। उस राफज़ी वज़ीर ने पौशीदा तौर पर मंगोलों से हाथ मिलाया और खत के ज़रिये बगदाद पर हमला करने की तरगीब दी। हलाकू खान के दरबार में भी एक राफज़ी था जिस ने उस राफज़ी वज़ीर का साथ दिया।

जब हलाकू बगदाद पर चढ़ाई के लिये आया तो उस राफज़ी वज़ीर ने सुलह का मशवरा दिया और कहा कि मै सुलह के शराइत ठहराने जाता हूँ। वोह गया और वापस आकर खलीफा से कहा कि ए अमीरुल मुअमिनीन! हलाकू खान की दिली ख्वाहिश है कि वो अपनी बेटी की शादी आप के बेटे से करा दे और आप उस की इताअत तसलीम करें तो वो लशकर ले कर वापस चला जायेगा और मुसलमान खूँ रेज़ी से बच जायेंगे।

खलीफा अमन के लिये निकला और वहाँ पहुँचा तो एक खेमे में उतारा गया। वज़ीर ने शहर में आकर उलमा वा फुक़्हा से कहा कि आप भी खलीफा के बेटे की शादी में शिरकत फरमायें, चुनाँचे वो बगदाद से निकले और क़त्ल कर दिये गये। शादी के बहाने एक के बाद दूसरे गिरोह को बुलाया जाता और क़त्ल कर दिया जाता।

मुअज़्ज़ज़ लोगों को क़त्ल करने के बाद खलीफा को क़त्ल किया फिर बगदाद शहर पर चढ़ाई कर दी और लाखों लोगों का खून बहाया। तीस दिन तक क़त्ल का सिलसिला जारी रहा! फिर मस्जिदों में शराब बहाई गयी और अज़ान पर पाबंदी लगा दी गयी।

(ملخصاً: علامہ نور بخش توکلی، سیرت رسول عربی)

ये कोई कहानी नहीं है बल्कि तारीख की एक झलक है जिस में हमारे लिये कई असबाक़ हैं।

अब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS

AMO